चन्द्रगत भारती

उत्तर प्रदेश

आती है जब याद तुम्हारी

व्यथा किसी से कुछ भी अपनी,
कब कह पाती रे
आती है जब याद तुम्हारी,
बेहद आती रे।।

देख तुम्हारी छवि को ही ये,
सूरज आँखे खोले!
सोंच तुम्हे बेसुध हो जाती,
जब कोयलिया बोले!
पनघट पर नयनो की गागर,
मै छलकाती रे।।
आती है जब ...

मै हूं प्रियतम प्रेम दिवानी,
जबसे सबने जाना!
बुलबुल मोर पपीहा निशदिन,
कसते मुझपर ताना!
मुई चाँदनी देख मुझे बस,
मुह बिचकाती रे।।
आती है जब ...

आ जाओ हरजाई वरना,
तुमको दूंगी गाली!
बिना तुम्हारे जग लगता है,
बिल्कुल खाली खाली!
और मस्त पुरवायी दिल मे,
आग लगाती रे।।
आती है जब ...

मुझे गुलाबी भी दिखता है,
तुम बिन बिल्कुल काला!
तुम दीपक हो इस जीवन के,
आओ करो उजाला!
तुम बिन साजन जली जा रही,
जैसे बाती रे।।
आती है जब ...

आहट आते ही फागुन की

आहट आते ही फागुन की,
याद तुम्हारी आयी है
खुशबू जैसे आज तुम्हारी
यह पुरवायी लायी है

खूब मचानों पर हम दोनो,
पंछी बैठ उड़ाते थे!
और कभी तो बेमतलब ही
आपस मे लड़ जाते थे!
सच मे गुजरा वक्त सोचना
मीत बहुत सुखदायी है।।

डूबा रहता सिर्फ तुम्ही मे
मन कुछ समझ न पाता है!
तन्हाई मे विह्वल होकर,
गीत प्रेम के गाता है!
बिना तुम्हारे यहाँ उदासी
बदली बनकर छायी है।।

मुद्दत से हम नही मिले पर
प्यार आज भी जिन्दा है!
निभा न पाये कसमें वादे
दिल बेहद शर्मिन्दा है!
आज मचलकर इन आँखों में
जैसे नदी समायी है।।